संपादक का नोट

मसीह में, प्रिय भाइयों और बहनों, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सबसे अतुलनीय नाम से आप सभी को अभिवादन करती हूँ।

पवित्र शास्त्र में, हमने ऐसे कई उदाहरण देखे हैं जहाँ प्रभु ने शर्मनाक जीवन को आशीषवान जीवन में बदल दिया है।

राहेल, एक बहुत ही सुंदर स्त्री थी, अपने पति याकूब द्वारा उसे बहुत प्रेम मिला था। फिर भी, उसके जीवन में एक खालीपन था क्योंकि उसके लिए उसके पति का प्यार पर्याप्त नहीं था। बांज होने और गर्भ धारण करने में असमर्थ होने के कारण वह दुखी थी। उत्पत्ति 30:1–2 ''जब राहेल ने देखा कि याकूब के लिये मुझ से कोई सन्तान नहीं होती, तब वह अपनी बहिन से डाह करने लगी और याकूब से कहा, "मुझे भी सन्तान दे, नहीं तो मर जाऊँगी।" 2 तब याकूब ने राहेल से क्रोधित होकर कहा, "क्या मैं परमेश्वर हूँ? तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रखी है।''

उनके एक बहस के दौरान, याकूब ने गुस्से में राहेल से पूछा कि क्या वह परमेश्वर के स्थान पर है, जिसके कारण वह गर्भ धारण करने में असमर्थ थी। उसका पति उसे जो वह एक बच्चे को जन्म देने में सक्षम नहीं थी, उसके दुःख या उस लज्जा से नहीं छुड़ा सका लेकिन परमेश्वर ने उसके शर्म को देखा और उसे इससे मुक्त कर दिया। उत्पत्ति 30:23–24 ''इसलिये वह गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया, तब उसने कहा, "परमेश्वर ने मेरी नामधराई को दूर कर दिया है।" इसलिए उसने यह कहकर उसका नाम यूसुफ रखा, "परमेश्वर मुझे एक पुत्र और भी देगा।'' परमेश्वर ने राहेल को एक पुत्र से आशीषित किया और उसके जीवन से उसकी लज्जा को दूर कर दिया।

शैतान के पास सबसे पसंदीदा हथियार है, जिसका नाम है 'शर्म', जिसका इस्तेमाल वह पूरी मानवजाति के खिलाफ करता है। वह हमारे और हमारे स्वर्गीय पिता के बीच एक प्रतिबंध पैदा करने के लिए तलवार के रूप में 'शर्म' का उपयोग करता है। हालाँकि वह एक बात भूल जाता है, जैसे कि, दो हजार साल पहले, यीशु ने उसे कलवारी के क्रूस पर कुचल दिया, और उन सभी लोगों को जीत दिलाई जो उन पर विश्वास करते थे। इसलिए, हमें इस हथियार का उपयोग बुराई पर बूमरैंग करने के लिए करना चाहिए, और इसके बजाय उसे दिखाना चाहिए कि वास्तव में हमारे प्रभु परमेश्वर में हमारा विश्वास कितना मजबूत है। प्रभु में हमारा विश्वास हमारे जीवन में ऐसे संकटमय समय पर दृढ़ होना चाहिए, और तभी वह हमारे जीवन में अपने चमत्कार कर सकते है।

हमेशा याद रखें – अपने हर दुख, दर्द, बीमारी, पाप और शर्म को 'कलवारी के क्रूस' तक ले जाना चाहिए क्योंकि यहीं पर हमारे जीवन का परिवर्तन और उद्धार रहता है।

जब तक दुबारा मिलें।

पास्टर सरोजा म।

हार मत मानो... विजयी हो।

रोमियों 2:7 ''जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा;'' मुझे दो मेंढकों की कहानी याद है, दोनों दही के बर्तन में गिरे। दोनों ने बर्तन से बाहर निकलने की पूरी कोशिश की। उन्होंने बहुत कोशिश की, लेकिन एक मेंढक बहुत थक गया और उसने लड़ाई छोड़ दी, इसलिए वह थक कर मर गया। दूसरे मेंढक ने लड़ाई नहीं छोड़ी, वह इधर–उधर घूमने की कोशिश करता रहा, इसी बीच दही मक्खन बनने लगा। अब मेंढक सख्त मक्खन पर चढ़ गया और मटके से बाहर कूद गया। कहानी की शिक्षा यह है कि हमें अपनी लड़ाई नहीं छोड़नी चाहिए या जीवन में आसानी से थकना नहीं चाहिए। हमारे आत्मारिक जीवन के साथ भी ऐसा ही है, हमें प्रभु के लिए एक धर्मी और सच्चा जीवन जीने की कोशिश करते हुए कभी थकना या हारा हुआ महसूस नहीं करना चाहिए। कई बार जब हम बहुत कोशिश करते हैं, तो दुष्ट हमारे जीवन में रुकावटें लाता है, जिससे हम थक जाते है या हार जाते है और एक नेक जीवन जीने की कोशिश करना बंद कर देते है। लेकिन, हमें प्रभु के लिए जीने का प्रयास जारी रखना चाहिए और अपने ऊपर शैतान द्वारा किए गए बुरे कामों से नहीं डरना चाहिए। उदाहरण के लिए, प्रभु का एक सेवक होगा जो प्रभु की सेवा में बने रहने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है। एक धर्मी व्यक्ति हो सकता है जो प्रभु के लिए एक अच्छा जीवन जीने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हो। जब कोई व्यक्ति एक धार्मिक जीवन जीने का प्रयास करता है या प्रभु के लिए कुछ करना चाहता है, तो सबसे पहले शैतान उनके खिलाफ आएगा; या तो उन्हें थका देने के लिए या उन्हें नष्ट कर देने के लिए। लेकिन हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम शैतान से लड़ाई जीतें।

नहेम्याह को भी ऐसी लड़ाई लड़नी पड़ी थी। उसने प्रभु के लिए एक मंदिर बनाना शुरू किया। लेकिन शैतान ने उसके खिलाफ आने की कोशिश की। हमें यह याद रखना चाहिए कि जब कोई यहोवा के लिए कुछ अच्छा करने का फैसला करता है, तो शैतान उसके खिलाफ उठ खड़ा होगा। आइए पढ़ें नहेम्याह 2:10 ''यह सुनकर कि एक मनुष्य इस्राएलियों के कल्याण का उपाय करने को आया है, होरोनी सम्बल्लत और तोबियाह नामक कर्मचारी जो अम्मोनी था, उन दोनों को बहुत बुरा लगा।'' यहाँ हम देखते हैं कि नहेम्याह यहोवा परमेश्वर के लिए एक मंदिर बनाना चाहता था, लेकिन लोगों ने उसकी हिम्मत को कैसे तोडना चाहा। आइए हम पढ़ें नहेम्याह 4:3 ''उसके पास अम्मोनी तोबियाह था, और वह कहने लगा, "जो कुछ वे बना रहे हैं, यदि कोई गीदड़ भी उस पर चढ़े, तो वह उनकी बनाई हुई पत्थर की शहरपनाह को तोड़ देगा।'' यहाँ वे कहते हैं "तो क्या हुआ अगर नहेम्याह प्रभु परमेश्वर के लिए एक मंदिर बना रहा है, लेकिन अगर एक लोमड़ी जो कुत्ते की तरह है (यह एक हाथी नहीं है जो एक बड़ा जानवर है), उस पर चढ़ता है, तो वह गिर जाएगा। इस प्रकार, यहाँ हम देखते हैं कि कैसे इस्राएली नहेम्याह के विरुद्ध बोल रहे थे। आइए हम पढ़ें नहेम्याह 4: 9 ''परन्तु हम लोगों ने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उनके डर के मारे उनके विरुद्ध दिन रात के पहरुए ठहरा दिए।'' लोगों ने राजा को नहेम्याह के विरुद्ध यह कहते हुए लिखा, कि यदि वह मन्दिर बनाए तो क्या होगा। इस प्रकार, नहेम्याह अब इस्राएलियों में से लोगों को मंदिर के निर्माण के लिए प्रार्थना करने के लिए चुनता है। वह चाहता था कि प्रार्थना योद्धा इस उद्देश्य के लिए दिन–रात प्रार्थना करें। हमें यह याद रखना चाहिए, जब भी हम प्रभु के लिए खड़े होते हैं या परमेश्वर के कार्य को पूरा करना चाहते हैं, तो शैतान यह जानता है और वह हमारे जीवन में बाधा लाएगा। जब हम प्रभु परमेश्वर से बहुत प्रेम करते हैं, तो शैतान हमें प्रभु से अलग करने के तरीके लाने की कोशिश करेगा। हाँ, शैतान हमारे जीवन में अलग–अलग तरीकों से काम करेगा, उस समय हमें उस मेंढक की तरह दृढ़ और मजबूत खड़ा होना चाहिए, जिसने दही के बर्तन में अपनी लड़ाई नहीं छोड़ी, बल्कि संघर्ष किया और क्योंकि यह लड़ाई में जारी रहा दही के बर्तन में दही को मक्खन में मथ दिया गया, इस प्रकार मेंढक को बर्तन से बाहर निकलने में मदद मिली। शैतान हमारे जीवन में भी कई लड़ाई और परीक्षण लाता है, लेकिन हमें इससे थकना नहीं

चाहिए, हमें अपनी आशा और विश्वास को मरे हुए मेंढक की तरह नहीं छोड़ना चाहिए, बल्कि उस मेंढक की तरह दृढ़ रहना चाहिए जो लड़ाई में बच गया। हमें प्रभु के लिए अच्छे कामों को जारी रखना चाहिए और जो काम हम ने शुरू किया है उसे पूरी लगन से पूरा करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। इस प्रकार, हमारे भले कार्यों के द्वारा, परमेश्वर की महिमा होगी और हम जीवन प्राप्त करेंगे।

लूका 18:1 ''फिर उसने इसके विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए, उनसे यह दृष्टान्त कहा:'' यीशु मसीह ने दृष्टान्तों में बताया कि कैसे शैतान से विजय प्राप्त की जाए। हमारा जीवन भी एक पराजित जीवन है, जैसे पापी के रूप में, क्रूस पर लुटेरे के रूप में, विभिन्न तरीकों से हम एक ही प्रकार के हैं। प्रभु परमेश्वर के हमारे जीवन में आने से पहले यह एक पापी जीवन था, लेकिन क्रूस पर लुटेरे की तरह, जिसने क्रूस पर अंतिम क्षण में अपने पापों को स्वीकार किया और इस तरह यीशु मसीह द्वारा उसे छुड़ाया गया। लुटेरे ने अपने जीवन के अंतिम कुछ मिनटों में क्रूस पर अपने पापों और अधर्म को महसूस किया और यीशु से कहा "हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।"। यीशु मसीह इस प्रकार उसे उत्तर देते हैं "मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" हां, हम अलग–अलग तरीकों से एक महान पापी हो सकते हैं, हमने प्रभु को धोखा दिया होगा, हम प्रभु से कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं, हम में कोई अच्छाई नहीं है और न ही हमारे काम प्रशंसा के योग्य हैं। प्रभु की दृष्टि में हमारा कुछ भी ठीक नहीं है। आज, आइए हम क्रूस पर लुटेरे की तरह बनें, आइए हम उनके जैसे क्रूस पर खुले हों और प्रभु परमेश्वर से पुकारें "मुझ पर दया करो, मैं आपके साथ अपना जीवन बिताना चाहता हूं, केवल आप ही मेरे पापों से मुझे बचा सकते हैं"। हाँ, यीशु हमें अपने प्रेम के शाल से ढँकेंगे और हमारी नग्नता को ढँकेंगे। परमेश्वर को हमें चंगा करने और हमारे पापों को क्षमा करने में समय नहीं लगता है, लेकिन यह हम ही हैं जो स्वयं को परमेश्वर और उनके प्रकाश से दूर रखते हैं ताकि हमारे पाप उससे छिपे रहें। जब हम प्रकाश से दूर जाते हैं, तो हम अपने पापों को छिपाने का प्रयास करते हैं। लेकिन हम कब तक प्रकाश से दूर रह सकते हैं, एक दिन हमें अपने पापों के उद्धार के लिए प्रभु परमेश्वर के पास जाना होगा। एक दिन हमें अपनी शांति और खुशी के लिए उनके पास जाने की जरूरत है। हमें आज क्यों प्रभु परमेश्वर के पास नहीं जाना चाहिए, अभी क्यों नहीं? आइए हम अपने पापों को स्वीकार करें और क्षमा मांगें और आज मुक्ति पाएं और विजयी और पूर्ण जीवन जीना शुरू करें। हमारा परमेश्वर हम जैसे पापियों के लिये आएं है, उनके लिये जो पापों में खोए हुए हैं और बीमारों और जरूरतमंदों के लिये हैं। अगर हम सोचते हैं कि हम महान हैं, हम ठीक हैं और बीमार नहीं हैं, तो प्रभु हमारे लिए नहीं आए हैं। प्रभु के सामने हम बीमार और जरूरतमंद हैं, अलग–अलग तरीकों से हमने अपने विचारों या कर्मों में प्रभु के साथ अन्याय किया है। अलग–अलग तरीकों से, हमारे भीतर पाप हैं, हम सब खोई हुई भेड़ें हैं। हाँ, खोए हुए, पापियों और बीमारों और जरूरतमंदों को बचाने के लिए प्रभु आए हैं। आइए आज हम उसे खोजें और पाएं।

पवित्र शास्त्र में हम दो पुरुषों की कहानी जानते हैं जो प्रभु के मंदिर में आए थे, एक अपनी छाती पीट रहा था और प्रभु से कह रहा था "मैं एक महान पापी हूं"। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और उसे पापों से छुड़ाया। इस प्रकार उसने प्रभु से आशीष लिया और चला गया। जबकि दूसरे व्यक्ति ने एक धार्मिक क्रिया के रूप में कानून के अनुसार प्रार्थना की, वह मानव जाति के लिए और इस दुनिया में जो कुछ भी अच्छा कर रहा है, उसके बारे में कहा। वह खाली चला गया और उसे अपने पापों से छुटकारा नहीं मिला। प्रभु की दृष्टि में हम सब पापी हैं, इस संसार में पापों की भरमार है। प्रभु परमेश्वर पहले ही कह चुके हैं "क्या मैं फिर से आने पर इस दुनिया में विश्वास और धार्मिकता देखूंगा"। हाँ, अब वह समय आ गया है। आज, हम सभी अलग–अलग तरीकों से परमेश्वर के सामने पापी हैं, या तो हम बीमार हैं या खो गए हैं, यदि हम आज परमेश्वर के सामने झुकते हैं और वास्तव में अपने पापों को स्वीकार करते हैं, जैसे यीशु ने क्रूस पर लुटेरे को क्षमा किया, वह भी हमें क्षमा करेंगे। फरीसियों और सदूकियों ने यीशु को शाप दिया और झूठा

दोष लगाया और सूली पर चढ़ा दिया, उन्होंने चुपचाप सब कुछ सहन कर लिया और उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया। वही प्रभु आज भी हमारे साथ हैं, वो आज भी हमें माफ करने को तैयार हैं। हमें केवल प्रभु के लिए अच्छे कार्य करने का प्रयास करना चाहिए और वह हमारे कार्यों को आशीष देंगे। आइए हम पढ़ें 2 कुरिन्थियों 4:1 ''इसलिये जब हम पर ऐसी दया हुई कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हियाव नहीं छोड़ते।'' हमारे कामों से अकेले प्रभु परमेश्वर की महिमा होनी चाहिए, या तो उनकी स्तुति गाते हुए या बाइबिल पढ़ना या प्रभु के लिए गवाही देना। उन्हें, हाँ, हर अच्छे काम को करने में हमें कभी भी हारे हुए या थके हुए नहीं होना चाहिए और हार नहीं माननी चाहिए। हमें हमेशा दो मेंढकों की कहानी याद रखनी चाहिए, एक जो थका हुआ और हारा हुआ था, मर गया, जबकि दूसरा जिसने सभी परीक्षणों और क्लेशों से संघर्ष किया, अंत में जीत हासिल की और जीवन प्राप्त किया। हाँ, अपने जीवन में भी हमें प्रभु के लिए किए जाने वाले प्रत्येक कार्य में मेहनती होना चाहिए और उसकी स्तुति और सम्मान करते रहना चाहिए। आइए हम रोमियों 2:7 को फिर से पढ़ें ''जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा;''

परमेश्वर किसको अनन्त जीवन देंगे? अनंत जीवन अचानक नहीं आता, इसके लिए प्रयास करना पड़ता है। जो लोग धार्मिकता के लिए प्रयास करते हैं, परमेश्वर उन्हें अनन्त जीवन की आशीष देंगे। आइए हम पढ़ें गलातियों 6:9 ''हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।'' जब हम लगातार प्रभु के लिए कार्य करने का प्रयास करते हैं, तो हमें कभी भी परमेश्वर में आशा और विश्वास नहीं छोड़ना चाहिए, अंत में हम विजय प्राप्त करेंगे। जब हम आम के बीज बोएंगे, तो हम आम काटेंगे, कटहल नहीं। इसलिए आज हम जो कुछ भी बोएंगे, कल वही फल काटेंगे। याद रखें, अगर हम नारियल बोते हैं, तो हम कटहल की उम्मीद नहीं कर सकते। वैसा कभी नहीं होगा। इस प्रकार, परमेश्वर के राज्य में भी हम जो बोएंगे वही काटेंगे। हम जानते हैं कि कैसे शैतान ने अदन की वाटिका में आदम और हव्वा को धोखा दिया, और कहा कि "यदि तुम इस वृक्ष का फल खाओगे, तो तुम ज्योतिमान हो जाओगे और परमेश्वर के समान बन जाओगे"। वे उस आज्ञा के विरुद्ध गए जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी और उन्होंने वर्जित फल को खाया। इस प्रकार, उनकी अवज्ञा के कारण, उन्हें अदन की वाटिका से निकाल दिया गया। हमारे जीवन को भी उसी तरह से जीने की जरूरत है, अगर प्रभु कहते हैं कि एक विशेष कार्य को करो तो हमें उसे पूरा करना चाहिए और प्रभु की महिमा करनी चाहिए। हम जो कार्य करते हैं उसका फल हमें नियत समय पर ही मिलेगा। आज, हम सोच सकते हैं कि यह मुश्किल है और आगे का रास्ता वास्तव में कठिन है, हम बार–बार गिर सकते हैं लेकिन हमें प्रभु परमेश्वर के लिए उठना सीखना चाहिए। वह हमें कभी अनाथ नहीं छोड़ेंगे, परन्तु नियत समय में हमें प्रतिफल और फल देंगे।

भजन संहिता 34:19 ''धर्मी पर बहुत सी विपत्तियाँ पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सबसे मुक्त करता है।'' हमें प्रभु के लिए अच्छे कार्य करने या परमेश्वर के बच्चों द्वारा किए जा रहे कार्यों का समर्थन करने के लिए कभी भी थकना नहीं चाहिए। हाँ, धर्मी लोगों को कई तरह से सतावों का सामना करना पड़ेगा, बार–बार शैतान हमें दबाने की कोशिश करेगा। परन्तु हमारा परमेश्वर हमें शैतान के सब कामों से छुड़ाता रहेगा। हमारा प्रेम, हमारे विचार, हमारे कार्य हमेशा केवल परमेश्वर की ही महिमा करना चाहिए। इसलिए, हमारे जीवन में हमारे खिलाफ आने वाले कई संघर्षों के बावजूद, यह परमेश्वर है जो हमारे दिलों में गहराई से देखते है और इस तरह वह हमें जीत दिलाएंगे। हम में से बहुत से लोग सोचते हैं कि हम प्रभु को मूर्ख बना सकते हैं, हमारे पास दोहरी प्रकृति है एक बाहरी दुनिया को दिखाने के लिए और एक हमारे भीतर। यह हमारी मूर्खता है, क्योंकि हमें हमेशा यह जानना चाहिए कि प्रभु हमारे हृदय में देखते है, बाहर नहीं। भजन संहिता 37:4 कहता है ''यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा।'' दिल की इच्छाओं को पूरा करने के लिए, हमें प्रभु परमेश्वर के साथ जुड़ने की जरूरत है, न कि इस पृथ्वी के

लोगों के साथ। बाइबिल कहता है, "शापित है वह मनुष्य जो मनुष्य पर भरोसा रखता है"। इस प्रकार, जब हम प्रभु में अपना विश्वास और भरोसा रखते हैं, तो वह ही हमें समृद्ध करेंगे और हमारे हर दिल की इच्छा को पूरा करेंगे। शैतान हमेशा हमें प्रभु से दूर रखने और हमारे जीवन में रुकावटें लाने की कोशिश करता है। लेकिन यह प्रभु है जो हमारे दिल की सभी इच्छाओं को पूरा करेंगे और वह हमें बाएं या दाएं मुड़ने के लिए मार्गदर्शन करेंग। हमारे जीवन में ऐसा होने के लिए हमें उनके साथ जुड़ना चाहिए "अपने आप को यहोवा में प्रसन्न करो और वह आपको अपने मन की इच्छाओं को पूरा करेंगे"।

हमें हमेशा प्रभु के सामने सच्चे रहना चाहिए और उन्हें धोखा नहीं देना चाहिए, तब वह हमारे दिल की हर इच्छा को पूरा करेंगे। आइए हम पढ़ें नीतिवचन 24:10 ''यदि तू विपत्ति के समय साहस छोड़ दे, तो तेरी शक्ति बहुत कम है।'' संकट के समय यदि हम विश्वास और आशा खो देते हैं, तो हमारी ताकत बहुत कमजोर होती है। उस समय हमें हमेशा प्रभु के साथ जुड़ना चाहिए और हम एक बार फिर दृढ़ होंगे। हम में से बहुत से लोग अपने जीवन में उस समय परमेश्वर से दूर चले जाते हैं, उनसे निराश रहते हैं, परमेश्वर के प्रकाश से दूर जाने का प्रयास करते हैं। याद रखें, जब हम प्रभु के साथ जुड़ जाते हैं, तो हम अपने सभी परीक्षणों से विजय प्राप्त कर लेते हैं, हमें इस दुनिया के लोगों के विपरीत दौड़ने की जरूरत नहीं है, जो अपने संकट के समय इधर–उधर भागते रहते हैं। वचन कहता है, **"हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।"** परमेश्वर का यह वादा उसके बच्चों के लिए है न कि इस दुनिया के लोगों के लिए। हाँ, परमेश्वर के बच्चों को केवल यीशु मसीह में ही अपना विश्वास और भरोसा रखना चाहिए। क्योंकि कल, आज और कल हमारा प्रभु एक सा ही है। यह हम हैं जो खुद को प्रभु के हाथों में देने से हिचकिचाते हैं।

1 कुरिन्थियों 10:13 कहता है ''तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।'' हमारा परमेश्वर प्रेम है, जब हमारे लिए एक दरवाजा बंद हो जाता है तो वह अपने बच्चों के लिए दस और दरवाजे खोल देंगे। प्रभु हमें कभी भी हमारी सहन करने की क्षमता से अधिक कष्ट सहने नहीं देंगे, क्योंकि वे स्वयं इस संसार में एक मनुष्य के रूप में आए और हमारी तरह पीड़ा और अपमान सहा। इस प्रकार, वह हमें केवल उतना ही कष्ट देंगे जितना हम सहन कर सकते हैं। जब मुसीबतें हमारे जीवन में आती हैं, तो उनके साथ दर्द और दुख भी होता है। मुसीबतें हमारे जीवन में दुख लाती हैं। प्रेरित पौलुस 2 तीमुथियुस 3:12 में कहता है ''पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे;'' जब हम परमेश्वर के धार्मिक मार्गों पर चलने का निर्णय लेते हैं, तो शैतान हमारे जीवन में रुकावटें लाएगा। जब हम परमेश्वर के सच्चे अनुयायी होंगे तो हमारे जीवन में सताहट आएगी। हम में से प्रत्येक को अपने जीवन में अपना स्वयं का क्रूस ढोना होगा। हमारे जीवन में दुख और दर्द कितना भी हो, अगर हम क्रूस को अपने सामने रखकर चलेंगे तो हमें जीत मिलेगी और हमारे जीवन में फल आएंगे। हम आज आम के बीज नहीं बो सकते और कल कटहल की उम्मीद नहीं कर सकते। इस प्रकार, हम अपने जीवन में मूर्ख न बनें, बल्कि अपने साथ परमेश्वर की प्रतीक्षा करें। अब्राहम दुखी था क्योंकि उसके जीवन में कोई बच्चा नहीं था, लेकिन प्रभु ने उसे बाहर निकाला और आकाश में तारे दिखाए और उससे वादा किया कि "तेरे वंशज आकाश के सितारों के समान होंगे"। अब्राहम को परमेश्वर की ओर से ऐसी अद्भुत आशीष क्यों मिली, क्योंकि वह हमेशा परमेश्वर के साथ जुड़ा और आज्ञाकारी था। हम शास्त्र में उस व्यक्ति की कहानी भी जानते हैं जो 38 साल से बैतहसदा कुण्ड में पड़ा था और उसके ठीक होने की प्रतीक्षा कर रहा था। परन्तु परमेश्वर उसे नहीं भूले, एक निश्चित समय पर यीशु ने आकर उसे चंगा किया। हमें याद रखना चाहिए कि उसका धैर्य रंग लाया, क्योंकि वह तालाब में पड़ा रहा, प्रभु ने उसे याद किया और आएं और उसे चंगा किया। यूहन्ना 5:8 ''यीशु ने उससे कहा, "उठ, अपनी खाट उठा, और चल फिर।'' यीशु ने कहा "उठ

और चल", आदमी ने यीशु की बात मानी, उसकी आज्ञाकारिता के साथ–साथ उसके अंगों में भी उठने और चलने की ताकत मिली। इस प्रकार, वह ठीक हो गया। यह प्रभु में उसका विश्वास थी जिसने उसे 38 साल तक कुण्ड में रखा। उसका धैर्य आखिरकार रंग लाया। हम भी जानते हैं एक दुर्बलता वाली महिला की कहानी, 18 साल वह ऊपर नहीं देख सकती थी लेकिन नीचे की ओर झुकी हुई थी। यीशु ने उससे मन्दिर में भेंट की और उसे चंगा किया। आइए हम पढ़ते हैं लूका 13:12–13 ''यीशु ने उसे देखकर बुलाया और कहा, "हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से छूट गई।" तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।'' सब्त का दिन था, यीशु ने मन्दिर में आकर उसे चंगा किया। वचन 11 कहता है ''वहाँ एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी।'' प्रभु के समय में उसने अपना आशीष प्राप्त किया। जब हम धैर्यपूर्वक उसकी प्रतीक्षा करते हैं तो परमेश्वर हमेशा हमें अपने समय में आशीष देते है। 18 वर्ष से वह स्त्री परमेश्वर का वचन सुनने के लिये मन्दिर में आती रही है। परमेश्वर की कृपा हम पर अचानक नहीं होती, वह हम पर नज़र रखते है, हमारे विश्वास को देखते है और हमें प्रभु पर भरोसा करना चाहिए, हमें प्रभु पर प्रतीक्षा करनी चाहिए और फिर उसके बाद ही वह हमें आशीष देते है। प्रभु अपने समय में, वह हमें आशीष देते है, जैसे उसने 38 साल के बाद बैतहसदा कुण्ड में आदमी को और 18 साल बाद महिला को बीमारी से ठीक किया।

सभोपदेशक 3:11 कहता है ''उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादिदृअनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य समझ नहीं सकता।'' प्रभु ने सभी चीजों को अपने समय में इस्तेमाल करने के लिए बनाया है। मानवजाति कभी नहीं समझ पायेगा या कभी नहीं जान पायेगा कि कैसे, लेकिन परमेश्वर अपने हर कार्य को अकेले अपने समय में पूरा करते है। इस संसार में, परमेश्वर ने अपने समय में प्रत्येक वचन को पूरा किया है। इस प्रकार यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर के साथ रहें और उन सभी कार्यों में विजय प्राप्त करें जो हम उनकी महिमा के लिए करते हैं। हमें अपने जीवन में कष्टों, परीक्षाओं और क्लेशों से कभी निराश नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें अपने जीवन में दृढ़ होना चाहिए। अलग–अलग तरीकों से हमारा जीवन धन्य है, जब लकड़ी को आग में डाला गया, तो लकड़ी से सांप निकला। इस प्रकार हमारे जीवन में यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने पास से सांप को बाहर आने दें जिससे हमें अपना आशीष प्राप्त कर पाएं।

यह वचन सभी के जीवन में आशीष लाए। प्रभु की स्तुति हो!

पास्टर सरोजा म।